

एकेश्वरवाद का मानव-जीवन पर प्रभाव

[हिन्दी – Hindi – ہندی]

साइट इस्लाम धर्म

संशोधन: अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2013 - 1434

IslamHouse.com

أثر التوحيد على حياة الإنسان

« باللغة الهندية »

موقع دين الإسلام

مراجعة: عطاء الرحمن ضياء الله

2013 - 1434

IslamHouse.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا،
وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

एकेश्वरवाद का मानव-जीवन पर प्रभाव

अल्लाह को एक और अकेला मानना

एकेश्वरवाद के मानने का मतलब निम्नलिखित बातों का मानना है—

- मनुष्य और सृष्टि का बनानेवाला और चलानेवाला एक अल्लाह है। वह अत्यन्त शक्तिशाली है, सब उसके सामने मजबूर और मुहताज हैं, उसकी मर्जी के बिना कोई कुछ नहीं कर सकता।
- वह किसी पर निर्भर नहीं है, सब उसपर निर्भर रहते हैं।
- उसकी न कोई औलाद है और न वह खुद किसी की औलाद है।
- वह अकेला और एकता है, कोई उसका साझी नहीं।
- उसका न कोई आदि है, न अन्त। जब कुछ नहीं था, तो वह था। वह हमेशा से था, हमेशा रहेगा। वही सबका

पालनहार और उपास्य (रब और माबूद) है। सब उसके दास हैं।

- वह सब कुछ जाननेवाला है। वह कुछ भी कर सकता है। उसके लिए कुछ असम्भव नहीं।
- वह अत्यन्त कृपा करनेवाला और दया करनेवाला है। वह न्याय और इन्साफ़ करनेवाला है।
- जो कुछ है सब उसी का पैदा किया हुआ है।
- उस जैसा कोई नहीं। वह बिल्कुल आज़ाद है। सब उसके सामने मजबूर हैं।
- वह तमाम ताक़त का मालिक, सबसे ज़्यादा शक्तिशाली व ताक़तवर है।
- अल्लाह सब कुछ जानता है। वह (अपने अपार ज्ञान के साथ) हर जगह मौजूद है। कोई भी चीज़ उसके कंट्रोल से बाहर नहीं।

- वह हमें देखता है, सुनता है, वह हमसे करीब है। मगर हम उसे नहीं देख सकते।
- वह निस्पृह (बेनियाज़) है। उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। मगर इन्सान को उसकी ज़रूरत है।
- वही और सिर्फ वही इबादत (उपासना) के लायक है। कोई उस जैसा नहीं। वह हमें ज़िन्दगी देता है और वही हमें मौत देता है।
- सफलता और असफलता, सम्मान और अपमान, अमीरी और ग़रीबी, खुशी व दुख, स्वास्थ्य और रोग, सबका देनेवाला या न देनेवाला या देकर वापस लेनेवाला वही एक अल्लाह है।

व्यक्ति और समाज की सभी बुराइयों की जड़ एक और सिर्फ एक है और वह है एकेश्वरवाद को न मानना अर्थात् यह नहीं मानना कि अल्लाह का अस्तित्व है, वह देख रहा है और

सबको उसका सामना करना है। एकेश्वरवाद के सिलसिले में समाज में चार तरह के लोग पाए जाते हैं—

1. पहला वर्ग उन लोगों का है जो एक अल्लाह का इन्कार करते हैं।
2. दूसरा वर्ग उन लोगों का है जो एक अल्लाह का ज़बान से इक्कार करते हैं, मगर दिल में यकीन नहीं रखते।
3. तीसरा वर्ग उन लोगों का है जो ज़बान से एक अल्लाह का इक्कार करते हैं और दिल में यकीन भी रखते हैं, मगर उसके आदेशों को नहीं मानते।
4. चौथा वर्ग उन लोगों का है जो ज़बान से एक अल्लाह का इक्कार करते हैं और दिल में यकीन भी रखते हैं और उसके आदेशों को भी मानते हैं।

एकेश्वरवाद को मानने का लाभ तब होता है, जब एक और सिर्फ़ एक अल्लाह को माना जाए। इस बात को हम एक

उदाहरण से समझ सकते हैं। मान लीजिए, हमारे पास ज़मीन का एक टुकड़ा है जो झाड़-झंकार, कंकर-पत्थर से भरा हुआ है और हम वहाँ गेहूँ उगाना चाहते हैं। अगर हम ज़मीन तैयार किए बिना उसमें बहुत उत्तम किस्म का बीज डाल दें, तो हमें अच्छी फ़सल की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

हमें सबसे पहले झाड़-झंकार और कंकर-पत्थर से ज़मीन को साफ़-सुथरा करना चाहिए और अच्छी तरह ज़मीन तैयार करनी चाहिए। फिर उसमें बीज बोना चाहिए, तब हम अच्छी फ़सल की उम्मीद कर सकते हैं।

यही मामला इन्सान के मन-मस्तिष्क का भी है। अगर उसमें एक अल्लाह के अलावा दूसरे खुदा भी मौजूद हों, तो फिर एकेश्वरवाद का पूरा लाभ नहीं मिलता और उसके पूरे प्रभाव इन्सान की ज़िन्दगी पर नहीं पड़ते। एकेश्वरवादका मानना

इन्सान की ज़िन्दगी में केन्द्रीयता लाना है, न कि संकट और बिखराव।

मानव जीवन पर एकेश्वरवाद के प्रभाव

इस्लाम के अनुसार, इन्सान एक इकाई (Unit) है। उसकी ज़िन्दगी के सभी पहलू एक-दूसरे से मिले हुए और परस्पर एक-दूसरे से जुड़े हुए (Interrelated) हैं। इन्सान के सामाजिक जीवन का आर्थिक जीवन पर, आर्थिक का राजनैतिक पर, राजनैतिक का सामाजिक पर, सामाजिक का मनोवैज्ञानिक पर, मनोवैज्ञानिक का नैतिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है। केवल किसी एक पहलू के सही होने से इन्सान का सही होना सम्भव नहीं।

इन्सान जब एकेश्वरवाद अर्थात् एक और एकता अल्लाह को मानता है, तो उसकी ज़िन्दगी के सभी पहलू प्रभावित होते हैं। एकेश्वरवाद के प्रभाव इन्सान के जीवन के सामाजिक पहलू,

व्यक्तिगत पहलू, आर्थिक पहलू, नैतिक पहलू, राजनैतिक पहलू, मनोवैज्ञानिक पहलू अर्थात् इन्सान की ज़िन्दगी के हर पहलू पर पड़ते हैं।

इन्सान के ध्यान का एक बिन्दु पर केन्द्रित होना

एकेश्वरवाद का मानना इन्सान को एकाग्रचित्त (Single minded) बनाता है। इस तरह इन्सान की सभी योग्यताएं बढ़ जाती हैं। जैसे सूरज की किरणें बिखरी होती हैं, मगर जब वे एक उन्नतोदर दर्पण या मुहदब शीशे (Sunglass) में से पास होती हैं, तो एक बिन्दु पर केन्द्रित होकर आग लगा देती हैं या इसे दूसरे उदाहरण द्वारा इस तरह समझ सकते हैं कि पानी का एक जहाज़ (Ship) हो, जिसका कोई कप्तान न हो और एक दूसरा जहाज़ हो, जिसका कोई कप्तान हो। नतीजा यह होता है कि बिना कप्तान का जहाज़ समन्दर की लहरों और हवा के थपेड़ों पर हिचकोले लेता रहता है और अपनी मंज़िल से भटक जाता है, जबकि वह जहाज़ जिसका कप्तान हो,

अपनी मंज़िल तक पहुंच जाता है। एकेश्वरवाद एक पतवार वाले नाव के समान है, जो एकेश्वरवादी इन्सान को अपने गन्तव्य और अन्तिम लक्ष्य तक पहुंचा देता है।

सम्पूर्ण सृष्टि के साथ एकता का एहसास

इन्सान और सृष्टि का एक बनाने और चलाने वाला है। इस बात से इन्सान में एकत्व (Oneness) का एहसास पैदा होता है। वह सब चीज़ों को अपनी ही तरह एक मालिक की मिलकियत या एक सृष्टा की सृष्टि मानकर सबके साथ अच्छा व्यवहार करता है। एकेश्वरवाद इन्सान को व्यापक दृष्टि वाला और विशाल एवं उदार हृदय वाला बनाता है। ऐसा इन्सान अपने लिए जो पसन्द करता है, वही दूसरों के लिए भी पसन्द करता है। वह सबको बराबर समझता है। वह सभी को इज़्ज़त और मुहब्बत का हक़दार समझता है, और किसी को तुच्छ या हकीर नहीं समझता।

आत्मविश्वास और आत्मसम्मान

एकेश्वरवाद अर्थात् यह मानना कि सब अल्लाह पर निर्भर हैं और वह किसी पर निर्भर (Depend) नहीं, इन्सान को आज़ादी और इज़्ज़त दिलाता है और खुददार बनाता है।

पैदा करनेवाले से सीधे तौर पर सम्पर्क

यह मानना कि अल्लाह हर इन्सान के करीब है, उसे देखता और सुनता है, इन्सान को इन्सान की दासता से आज़ाद करता है और बिचौलिये (Middle Man) की अवधारणा या कल्पना से आज़ादी देता है। इन्सान हर तरह के अंधविश्वास से आज़ाद हो जाता है।

अल्लाह का डर

डर दो तरह के होते हैं—

1. अल्लाह का डर (Fear of God),
2. गैरुल्लाह का डर (Fear of non-God)

अर्थात् अन्धेरा, भूत, जानवर, हानि, दुर्घटना और मौत इत्यादि का डर।

गैरुल्लाह का डर (Fear of non-God) इन्सान पर नकारात्मक प्रभाव डालता है और उसे डरपोक और कमज़ोर बनाता है और अल्लाह का डर इन्सान पर सकारात्मक प्रभाव डालता है और उसे बहादुर तथा ताक़तवर बनाता है। जब इन्सान यह मानता है कि सफलता और असफलता, दुख और सुख, अमीरी और ग़रीबी, ज़िन्दगी और मौत, सम्मान और अपमान, हानि और लाभ, स्वास्थ्य और रोग, बल और निर्बलता सबका देने या न देने या देकर वापस लेनेवाला एक अल्लाह है, तो इन्सान एक बहादुर सिपाही, हिम्मतवाला व्यापारी, ईमानदार टीचर, सही डॉक्टर, भला इंजीनियर बनता है।

विनम्रता और सज्जनता

एक बेहद ताक़तवर और हमेशा रहनेवाले अल्लाह को मानने का नतीजा यह होता है कि इन्सान अपनी ताक़त को उसकी

ताक़त के सामने कम और अस्थायी समझने लगता है। इसका असर यह होता है कि ऐसा इन्सान जान लेता है कि अल्लाह कमज़ोर का भी साथी है। इसका नतीजा यह निकलता है कि हक़ के रास्ते में वह कमज़ोर को ताक़तवर और ताक़तवर को कमज़ोर समझने लगता है और न्याय और इन्साफ़ की दृष्टि से काम करता है। इस तरह समाज से अत्याचार घटता है, बल्कि अत्याचार का खात्मा हो जाता है और इन्सान में विनम्रता पैदा होती है। लोग अत्याचार इसलिए करते हैं कि वे खुद को बहुत ताक़तवर और अपनी ताक़त को हमेशा रहनेवाली समझने लगते हैं।

घमंड न करना

एकेश्वरवाद का मानना यह है कि इन्सान समझे कि अल्लाह ही देने, न देने और देकर वापस लेनेवाला है। इस बात का

प्रभाव इन्सान पर यह पड़ता है कि वह अपनी दौलत, ताकत, योग्यता, क्षमता और औलाद पर घमंड नहीं करता, बल्कि शुक्र करता है, अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा बनकर रहता है और सारे इन्सानों का हितैषी बनने की हर संभव कोशिश करता है। अल्लाह इन्सान को उसके अपने घर में ही अपमानित कर सकता है। उसके अपने बिस्तर और शरीर में कैद कर सकता है। उसके अपनों को ही उसका दुश्मन बना सकता है। इन्सान को खुद उसकी अपनी ताकत को ही उसके लिए मुसीबत बना सकता है। इस बात का मानना इन्सान को घमंडी होने से रोक देता है।

एकेश्वरवाद को मानते हुए इन्सान जब सज्दा करता है और अपना माथा तथा अपनी नाक ज़मीन पर रखता है, तो व्यावहारिक रूप से अल्लाह की बड़ाई के सामने अपनी तुच्छता या कमतरी का इज़हार करता है।

आशावाद, न कि निराशावाद

दुनिया की सारी तरक्कियाँ और आविष्कारों (Discoveries) के पीछे एक चीज़ होती है और वह है उम्मीद (Hope), कामयाबी की उम्मीद। प्रत्येक वैज्ञानिक उम्मीद के सहारे अपनी खोज एवं शोध की शुरुआत करता है, जान-तोड़ कोशिश करता है, जो उसे कामयाबी तक ले जाती है। जितनी ज़्यादा उम्मीद, उतनी ज़्यादा जान-तोड़ कोशिश और उतनी ज़्यादा कामयाबी। उम्मीद इन्सान को काम करने के लिए प्रेरित करती है—किसान को फ़सल की उम्मीद, रोगी को सेहत या स्वास्थ्य की उम्मीद, व्यापारी को लाभ की उम्मीद, विद्यार्थी को सफलता की उम्मीद और सैनिक को जीत की उम्मीद ही जान-तोड़ कोशिश के लिए उभारती है।

इन्सान जब एकेश्वरवाद को मानता है, तो फिर वह एक ऐसे खुदा को मानता है जिसके कंट्रोल में हर चीज़ है। कोई भी उसके क़ाबू से बाहर नहीं। वह जब चाहे और जो चाहे कर सकता है। वह कभी और किसी भी असफलता को सफलता में,

दुख को खुशी में और गरीबी को अमीरी में बदल सकता है। इस तरह एकेश्वरवाद का माननेवाला इन्सान कभी निराश नहीं होता, निराशा का शिकार नहीं होता। वह हमेशा आशावान रहता है, आशा एवं उत्साह से भरा रहता है, निराशा, उदासी और विषाद (Depression) से सुरक्षित रहता है और आत्महत्या कभी नहीं करता।

धैर्य

एकेश्वरवाद को माननेवाला व्यक्ति अपनी सभी सफलताओं और असफलताओं का श्रेय (Credit) अल्लाह को देता है। नतीजा यह होता है कि वह सफलता पर घमंड नहीं करता और असफलता पर निराश नहीं होता, बल्कि सफलता पर अल्लाह का शुक्र अदा करता और असफलता पर धीरज रखता है। धैर्य व आत्मबल का दामन हाथ से छोड़ता नहीं।

अल्लाह की चेतना

एकेश्वरवाद का माननेवाला यह मानता है कि अल्लाह का अस्तित्व है और वह सब कुछ देख और सुन रहा है। यह एहसास उसे सारी बुराइयों से बचा लेता है और उसे हर तरह की अच्छाइयां करने के लिए उभारता है। ऐसा इन्सान अपने हर वादे को अल्लाह से किया हुआ वादा (Commitment) जानता और मानता है ऐसा इन्सान अपनी कथनी और करनी में पूरा उतरने की कोशिश करता है, ऐसा इन्सान लोगों का पूरा-पूरा हक अदा करनेवाला बनता है, जिससे समाज में आपसी विश्वास (Mutual trust) और सामाजिक न्याय (Social Justice) और शुभेच्छा (Well-wishing) पैदा होती है।

अल्लाह के, साथ होने (Presence of God) का एहसास इन्सान को हर समय होशियार और सचेत (Alert) रखता है। अल्लाह हर चीज़ को जानता है, यह एहसास इन्सान के मामलों को बदल देता है। आज दुनिया में जो संकट या

समस्या (Crisis) नज़र आती है, उसका कारण कहीं अत्याचार है और कहीं अत्याचार की प्रतिक्रिया—कभी ताक़तवर की तरफ़ से और कभी कमज़ोर की तरफ़ से।

अल्लाह के होने का एहसास इन्सान को न्याय और अन्याय के वर्गों में सोचना सिखाता है अर्थात् न्याय क्या है और अन्याय क्या, इससे इन्सान को यह एहसास अच्छी तरह वाकिफ़ कराता है, न कि मेरा लाभ और मेरी हानि, मेरी पसन्द और मेरी नापसन्द के वर्गों में।

आज दुनिया शान्ति और सलामती की बात करती है, न्याय और इन्साफ़ की नहीं, जबकि शान्ति और सलामती नतीजा है न्याय और इन्साफ़ का। सिर्फ़ एकेश्वरवाद (तौहीद) का एहसास ही इन्सान को न्याय और इन्साफ़ करने वाला बनाए रखता है और हमेशा बनाए रख सकता है।

सच्चाई

एकेश्वरवाद को मानकर इन्सान सच्चाई को पसन्द करने वाला (Truth-loving Person) बन जाता है। वह हमेशा सच बोलता है, क्योंकि उसका अल्लाह सच्चाई को पसन्द करता है। सच्चा इन्सान सही बात कहता है, चाहे वह उसके अपने मां-बाप के खिलाफ ही क्यों न हो। सच्चाई इन्सान को उसूली या सिद्धांतप्रिय इन्सान (Man of Principle) बनाती है। इस तरह व्यक्ति और फिर समाज कपटाचार या मुनाफ़िक़त (Hypocrisy/Double Standard) से मुक्त हो जाता है।

इच्छाओं को काबू में करना

इन्सान और उसकी इच्छाओं के बीच दो में से एक ही रिश्ता हो सकता है—या तो इन्सान इच्छाओं को कंट्रोल करे या इच्छाएं इन्सान को कंट्रोल करें। जब इन्सान एकेश्वरवाद (तौहीद) अर्थात् एक और सिर्फ़ एक अल्लाह को मानता है तो अल्लाह की मर्ज़ी के सामने अपनी मर्ज़ी और इच्छाओं को

त्याग देता है। इस तरह उसकी इच्छाएं उसके क़ाबू में रहती हैं।

गुस्से को क़ाबू करना

इन्सान और उसके गुस्से के बीच दो में से एक ही रिश्ता होता है—इन्सान गुस्से को कंट्रोल करे या गुस्सा इन्सान को कंट्रोल करे। जब इन्सान ऐकेश्वरवाद को मानता है, तो अल्लाह के आदेश को मानता है।

- अल्लाह भले और अच्छे बन्दों के बारे में कहता है—

“जब उन्हें गुस्सा आता है, तो माफ़ कर देते हैं।” (कुरआन, ४२:३७)

- अन्तिम ईशदूत पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा—

“जिस किसी (आदमी) ने अपने गुस्सा को रोका, अल्लाह क्रियामत (महाप्रलय) के दिन उससे अपनी यातना (अज़ाब) को रोक लेगा।” (बैहकी : शोबुल-ईमान)

समाज को गुस्से के कारण बहुत हानि पहुंचती है। भरे हुए जेलखाने, अदालतें और अस्पताल इसके उदाहरण हैं।

मानसिक स्वास्थ्य

इन्सान की सोच का उसके आचरण और काम पर प्रभाव पड़ता है। सोच और आचरण का रिश्ता ऐसा है, जैसे बैल और बैलगाड़ी का, जिधर बैल जाएगा, उधर गाड़ी भी जाएगी। दिमाग एक बाग की तरह होता है। जब उसकी देख-भाल नहीं की जाती तो उसमें बिगाड़ पैदा हो जाता है। नकारात्मक सोचों के साथ रचनात्मक और सकारात्मक काम नहीं हो सकता। जब हम एकेश्वरवाद को मानते हैं, तो हमारा मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health) भी अच्छा रहता है और हम मानसिक प्रदूषण (Mental Pollution) भी नहीं फैलाते, क्योंकि अल्लाह चुगली, दोषारोपण और लम्बी-लम्बी छोड़ने को नापसन्द करता है। अल्लाह किसी के प्रति अच्छा विचार रखने को पसन्द करता है। टोह लेने, भ्रम, ग़लत धारणा आदि बुरी

बातों को अल्लाह नापसन्द करता है। हम इनसे बचते हैं तो मानसिक व नैतिक स्तर पर सेहतमन्द रहते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा दी गई स्वास्थ्य की परिभाषा

“शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक (धार्मिक) दृष्टि से सही होने की संतुलित सतह का नाम स्वास्थ्य है, न कि बीमारी के न होने का।”

विश्वास का संकट

आज की दुनिया में बुराई का अनुपात अच्छाई के मुक़ाबले में लगातार बढ़ रहा है और समाज में विश्वास का संकट पैदा हो रहा है।

बाप ने अपने बच्चे से कहा, “झूठ मत बोलो।” फिर अगर कोई मिलने आता है, तो खुद कहता है कि कह दो, “घर पर नहीं हैं।” शिक्षक कहता है, “ईमानदार बनो।” मगर खुद क्लास नहीं लेता। नेता कहता है, “अपने देश के लिए कुरबानी दो।” और वह खुद देश के हितों को अपने हित पर कुरबान कर रहा है।

इन परिस्थितियों में नई पीढ़ी के सामने कोई 'आदर्श प्रतिरूप' (Role Model) या 'आदर्श लक्ष्य' नहीं है। नतीजा यह होता है कि वह स्वार्थ तथा भोग-विलास और मनोरंजन (Entertainment and Fun) को ही अपना आदर्श बना लेती है। कथनी और करनी का यह विरोधाभास विश्वास के संकट (Trust Crisis) का कारण बन गया है। लेकिन एकेश्वरवाद ही एक ऐसी विचारधारा है जो इस बीमारी को खत्म कर सकती है, क्योंकि एकेश्वरवाद का माननेवाला जानता है कि अल्लाह उससे कहता है—

“वह बात क्यों कहते हो, जो करते नहीं।” (कुरआन, ६१:३)

धरती पर स्वर्ग

दुनिया में बहुत-सी विचारधाराएं पैदा हुईं और उनके अनुसार अनगिनत व्यवस्थाएं (Systems) अस्तित्व में आईं और अनेक

प्रकार के दर्शन पैदा हुए। जैसे—साम्यवाद (Communism), पूंजीवाद (Capitalism) समाजवाद (Socialism) इत्यादि। इन सबका लक्ष्य 'संसार में स्वर्ग स्थापित करना' अर्थात् एक ऐसा समाज बनाना था, जिसमें पूर्ण न्याय हो, शान्ति हो, खुशी हो, खुशहाली हो, मगर आज तक ये सारी कोशिशें असफल रही हैं, यहां तक कि आज दुनिया में एक विचारधारा-सम्बन्धी शून्य (Ideological Vacuum) पैदा हो गया है। इसका कारण क्या है? इसका कारण एकेश्वरवाद से लोगों की दूरी है, क्योंकि एकेश्वरवाद और सिर्फ एकेश्वरवाद ही एकमात्र विचारधारा है, जिसे मानकर और जिस पर चलकर संसार को स्वर्ग बनाया जा सकता है। इन्सान जितना ज़्यादा एकेश्वरवाद को मानेगा, उतनी ज़्यादा बुराई दुनिया से खत्म होगी और उतनी ही ज़्यादा अच्छाइयों का प्रचलन व स्थापन होगा।

एकेश्वरवाद को माननेवाले व्यक्ति का उद्देश्य अल्लाह की खुशी हासिल करना होता है और अल्लाह को राज़ी करने के लिए

इन्सान को झूठ बोलना छोड़ना होगा, दुनिया से झूठ कम होगा। अल्लाह को राज़ी करने के लिए इन्सान को घूस लेना छोड़ना होगा, दुनिया से घूस कम होगा, अल्लाह को राज़ी करने के लिए इन्सान को अन्याय और अत्याचार बन्द करना होगा, दुनिया से अन्याय और अत्याचार कम होगा। अल्लाह को राज़ी करने के लिए इन्सान को भ्रष्टाचार (Corruption) छोड़ना होगा, दुनिया से भ्रष्टाचार कम होगा।

जवाबदेही और ज़िम्मेदारी का एहसास

एकेश्वरवाद को मानने का मतलब यह है कि यह माना जाए कि अल्लाह ने इन्सान को पैदा किया और उसकी ज़िन्दगी को दो हिस्सों में बांटा—मौत से पहले की ज़िन्दगी (Pre-death Life) और मौत के बाद की ज़िन्दगी (Post-death Life) और इनके बीच में मौत (Death) को रखा। पहली ज़िन्दगी परीक्षा के लिए है और यह अस्थायी और क्षण-भंगुर है और दूसरी

ज़िन्दगी सज़ा या इनाम के लिए है और वह हमेशा रहने वाली है और दोनों के बीच मौत एक स्थानान्तरण (Transit) है।

अल्लाह है, देख रहा है और उसका सामना करना है। वह इन्सान के विचारों को अवचेतन में, इन्सान की बातों को आवाज़ की लहरों में और इन्सान के कामों को ऊर्जा की लहरों के रूप में रिकॉर्ड कर रहा है।

यह मानना इन्सान में ज़िम्मेदारी और जवाबदेही का एहसास पैदा करता है और वह दूसरों का भला चाहने और हक और अधिकार देने वाला और अन्याय और अत्याचार न करने वाला बनता है।

- अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा—

“परलोक (आखिरत) में हर आदमी को चार सवालों का जवाब देना होगा: ज़िन्दगी कहां गुज़ारी? जवानी कहां गुज़ारी? दौलत कैसे कमाई? दौलत कहां खर्च की?”

उम्मीद और डर

एकेश्वरवाद का मानना इस बात को मानना है कि अल्लाह अत्यन्त दयावान है, माफ़ करनेवाला है, मगर न्याय और इन्साफ़ करनेवाला और कठोर सज़ा देने वाला भी है। यह बात इन्सान को उम्मीद और डर के बीच रखती है, क्योंकि अगर केवल उम्मीद ही उम्मीद हो, तो इन्सान ढीठ हो सकता है और बेझिझक गुनाह कर सकता है, लेकिन अगर केवल डर ही डर हो तो इन्सान निराशा का शिकार हो सकता है। उम्मीद और डर के बीच वाली स्थिति उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के कथन से पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है, जिसमें उन्होंने कहा है—

“अगर आसमान से आवाज़ आए कि एक आदमी दुनिया में से नरक में जाएगा, तो मैं समझूंगा कि वह मैं हूँ और अगर आसमान से आवाज़ आए कि एक आदमी दुनिया में से स्वर्ग में जाएगा, तो मैं समझूंगा कि वह मैं हूँ।”

हर समय सतर्क

एकेश्वरवाद का मानने वाला यह मानता है कि अल्लाह मालिक (Lord) है और मैं दास (Slave)। तब उसकी पूरी ज़िन्दगी इबादत अर्थात् दासता (Slavery) बन जाती है। इस तरह वह हर समय (Full Time) अल्लाह के सम्पर्क (Contact) में रहता है। इस्लाम इन्सान के लिए कोई पार्ट टाइम चीज़ नहीं है, बल्कि यह इन्सान की पूरी ज़िन्दगी पर छाया हुआ होता है, ऐसा आदमी हमेशा सतर्क और सावधान रहता है।

इन्सानों का सुधार

इन्सान का दो तरीकों से सुधार किया जा सकता है—अन्दर से बाहर की तरफ़ (Outward) और बाहर से अन्दर की तरफ़ (Inward)।

एक तरीका यह है कि क़ानून, ताक़त या सज़ा का डर पैदा करके इन्सान को बुराई करने से रोका जाए और दूसरा तरीका यह है कि अन्दर अर्थात् अक़ीदा (धर्म के प्रति आस्था एवं

विश्वास) के द्वारा (अल्लाह है, देख रहा है और उसका सामना करना है)। इस्लाम इसी दूसरे तरीके को प्रमुखता व प्राथमिकता देता है, क्योंकि समाज में ऐसे भी लोग होते हैं जो बेहद ताकतवर हैं, जिन्हें कानून और ताकत आदि किसी चीज़ का डर नहीं होता। उन्हें केवल एकेश्वरवाद की धारणा ही ठीक रख सकती है। यह धारणा अथवा आस्था सामाजिक चेतना (Civic sense) पैदा करती है। एकेश्वरवाद का मानने वाला एक जिन्दा अल्लाह को मानता है। इसलिए वह कभी ट्रैफिक की लाल बत्ती नहीं फलांगता, सरकारी सम्पत्ति (Property) को बरबाद नहीं करता। एकेश्वरवाद का मानने वाला एक अच्छा पिता, एक अच्छा पति, एक अच्छा मैनेजर, अच्छा नेता, अच्छा व्यापारी, अच्छा सैनिक, अच्छा शिक्षक, अच्छा डॉक्टर, अच्छा इंजीनियर, अच्छा क्लर्क, अच्छा वकील, अच्छा जज, अच्छा पुलिसकर्मी, अच्छा ऑफिसर, अच्छा मातहत अच्छा

मंत्री, अच्छा उद्योगपति, अच्छा किसान, अच्छा श्रमिक आदि
साबित होता है।